ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 308-310
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

अन्त्योदयः पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि

प्रो0 राम कृष्ण उपाध्याय
निदेशक– पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया,
सह अध्यक्ष– अर्थशास्त्र विभाग, कुँवर सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-20.12.2022, Revised-24.12.2022, Accepted-28.12.2022 E-mail: dr.ramkrishna1975@gmail.com

***सारांशः** भारत में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समाज की आर्थिक सहायता के लिए प्रमुख रूप से दो प्रकार के सिद्धांत हैं – प्रथम, रिसाव सिद्धांत जो पूंजीवाद और उपभोगवाद से सम्बंधित है । द्वितीय, अन्त्योदय जो भारतीय दर्शन की आधारशिला है। इस सिद्धांत के अनुसार जिसको जितनी जरुरत है – उसको उतनी जल्दी उतनी मात्रा में आवश्यकता पूर्ण किया जाय। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और उनका अन्त्योदय की विचारधारा।*

***कुंजीभूत शब्द–** अन्त्योदय, संवेदना, करुणा, सतत विकास लक्ष्य, आत्मीयता, कर्तव्यपरायणता, प्राचीन ग्रन्थ वेद।*

अन्त्योदय शब्द सिर्फ शब्द ही नहीं है, यह संवेदना है, करुणा है, सहानुभूति है, साधना है, प्रेरणा है, आत्मीयता है, कर्तव्यपरायणता है। अन्त्योदय का दर्शन भारतीय शास्त्रों के उद्गारों में देखने को मिलता है। सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद, संपूर्ण जगत के उत्थान की बात करते हैं, और उनके कल्याण को ही अपना आधार मानते हैं –

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माँ कश्चिद दुःखभागभवेत"।।

ईशोपनिषद् के पहले श्लोक–

'ईशा वास्यमिदं सर्व यात्किंच जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम।।

तथा गीता के 'आत्मवत सर्वभूतेषु' और 'सर्वभूत हितो रतः' जैसे शब्दों में अन्त्योदय और एकात्म भाव निहित है। उक्त सभी में श्रृष्टि के संपूर्ण विकास और संवर्धन का चिंतन है।

अन्त्योदय का सिद्धांत है– अद्वैत, और उसकी नीति है– समाज और प्रकृति में समन्वय। इसका लक्ष्य है– मानवीकृत असमानता का अंत करना और प्रकृति कृत विषमता को न्यूनतम करना।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री डार्विन ने जहाँ 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' तथा हम्सले ने 'जीयो और जीने दो' कहा वहीं अन्त्योदय कहता है कि तुम स्वयं के जीवन को विकसित कर समाज के हितचिंतन के लिए कार्य करो। यह वर्गविहीन, शोषणमुक्त और समतायुक्त समाज की स्थापना की संकल्पना करता है, जिसमें हर किसी को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर प्राप्त हो सके। यह एक ऐसा समाज रचता है, जिसमें वर्ग, वर्ण, जाति, भाषा–भूषा, भोजन, क्षेत्र, पन्थ आदि के आधार पर किसी समुदाय का न तो संहार हो न ही बहिष्कार हो।

समाज रचना ऐसी हो, जो समग्र के निर्माण और समग्र की शक्ति से समग्र के हित में चलें, जिसमें कम या अधिक शारीरिक सामर्थ्य के सभी लोगों को समाज का संरक्षण और संवर्धन का अवसर समान रूप से प्राप्त हो। अन्त्योदय कोई राजनितिक सन्दर्भ नहीं है, यह आर्थिक योजना भी नहीं है, बल्कि संपूर्ण समाज के चिंतन को झकझोरने वाली एवं उसे भारतीयता के मूल तत्वों से जोड़कर समाज के सर्वांगीण विकास के सिद्धांत को पूर्ण तत्व प्रदान करने वाली एक परिकल्पना है। जो अपने मूल तत्व में साकार रूप में परिवर्तित होती है। यह अंतिम सोपान पर बैठे व्यक्ति को शीर्ष शिखर पर ले जाने वाला प्रकल्प है, जिसका आधार संघर्ष नहीं सहिर्दय समंजन है। अन्त्योदय की संकल्पना करते वक्त निचले पायदान पर स्थित सभी व्यक्तियों का संतुलित रूप से विकास करें जिससे राष्ट्रीय कल्याण में उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो सके तथा अपने पारिवारिक और सामजिक दायित्वों का निर्वाह करने में सक्षम बन सकें।

पंडित दीनदयाल जी ने इसी चिंतन को सरल भाषा में अन्त्योदय के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया। अन्त्योदय शब्द पंडित दीनदयाल जी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा दर्शन है जिसमें 'सर्वभूत हितो रताः' की भारतीय कल्पना, विवेकानंद का 'नर सेवा नारायण सेवा', महात्मा गाँधी का सर्वोदय, सुकरात की 'सत्य साधना' और जॉन रस्किन की 'अनटू दिस लास्ट' (अन्त्योदय की अवधारणा) सब कुछ इसमें शामिल है। दीनदयाल जी कहते हैं कि . 'हमें कोई पंथ या सम्प्रदाय नहीं बनाना है, हमें समाज की वास्तविक सेवा करनी है।'

पंडित दीनदयाल जी अन्त्योदय पर एक आम आदमी की करुणाजनक स्थिति पर अपनी पीड़ायुक्त भावना को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि "मनुष्य जो ईश्वर का सर्वोच्च सृजन है, अपनी पहचान खो रहा है। हमें उसे उसकी वास्तविक स्थिति में पुनर्स्थापित करनी चाहिए, उसे अपनी महानता का स्वयं बोध करना चाहिए, उसे अपनी क्षमताओं को पुनः जागृत करने के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

साथ–साथ अपने अव्यक्त व्यक्तित्व की दिव्य ऊँचाई को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे उसमें एकात्म का भाव उत्पन्न हो और समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प ले। उन्हें यथाशीघ्र रोजगार, आय और सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार मिले और राष्ट्र का समग्र विकास हो। इस कार्य को संपन्न करने की पूर्ण पद्धति ही अन्त्योदय है।

जिस प्रकार बाइफोकल (मोडरेट) चश्मे में निकट और दूर दृष्टि दोनों ही प्रकार के लेंस इस प्रकार से सेट रहते हैं कि नेत्रों को ऊपर–नीचे करने से उसी के अनुकूल दृष्टि व्यवस्थित और अनुकूल हो जाती है उसी प्रकार आर्थिक प्रगति के लिए छोटी और बड़ी, अल्पकालीन, दीर्घकालीन और अतिदीर्घकालीन सभी प्रकार की योजनायें जो भी आवश्यक होती हैं, वह सबके साथ, सबके विकास, सबके विश्वास और सबके प्रयास से सबके कल्याण के लिए वे योजनायें लागू हों, जिनसे समाज के पिछड़े हुए अधिकांश लोगों का भला हो, यही है अन्त्योदय।

सब देशों, सब समयों एवं सब परिस्थितियों में कोई एक तकनीक उपयुक्त नहीं हो सकती। अतः उपयुक्त टेक्नोलॉजी का विचार देशकाल की परिस्थितियो के अनुसार किया जाना चाहिए। नीति नियंताओं ने भारत माता की आत्मा को ठीक ढंग से नहीं समझा। भारत की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है कि यहाँ किसी एक नीति और नियम को लागू कर विकास नहीं किया जा सकता है। यहाँ तीन मौसम, छः ऋतुएँ, पर्वतीय, मैदानी, पठारी क्षेत्रय काली, दोमट, बलुअठ इत्यादि मिट्टियाँ, समुद्री किनारों, और नदियों से घिरे क्षेत्रों आदि जैसी विविधताओं से भरेपूरे होने के कारण नीति आयोग को भारत के डेमोग्राफी, पूँजी, तकनीकी उपलब्धता, नवाचार आदि पर क्षेत्र विशेषतावार शोधकर ही विकास की नीति बनायीं जानी चाहिए।

भारत की लगभग ७० प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है। सरकार स्मार्ट सिटी योजना पर अत्यधिक जोर दे रही है, इससे ग्रामीण शहरों की ओर भागेंगे स इस कारण गाँव से पलायन और शहरों में बढ़ता जन बोझ शहर में स्वास्थ्य, शिक्षा, सफाई, आवास आदि अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देंगी। इसलिए गाँव में ही शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई, विजली, पानी, यातायात, मनोरंजन आदि की सुविधाएं उपलब्ध करा स्मार्ट विलेज बनाने की जरुरत है, ताकि गाँव से जनसँख्या का पलायन रुके और गाँव के द्वारा ही गाँव के विकास की व्यवस्था बनाई जा सके। वर्तमान सरकार भूमि अधिग्रहण कर देशी व विदेशी निवेश द्वारा गाँव में ही बड़ी संख्या में उद्योग स्थापित कर 5–7 किमी के रेडियस पर क्लस्टर स्मार्ट विलेज बना, सीजनल, रीजनल और ओरिजिनल को बढ़ावा देकर GI Tag द्वारा प्रोत्साहित कर वोकल फॉर लोकल और मेक इट ग्लोबल द्वारा ग्राम्य व्यवस्था को सु.ढ़ बना रोजगार और आय बढ़ाने का काम श्यामा प्रसाद मुखर्जी रुर्बन मिशन द्वारा पूर्ण करने में लगी है । इतना ही नहीं संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सितम्बर २०१५ में घोषित १७ सतत विकास लक्ष्यों SDG) को आज समावेशी विकास के रूप में २०३० तक लक्ष्यों को प्राप्त करने का उद्देश्य केंद्र सरकार की प्राथमिकता है। SDG लक्ष्यों का उद्देश्य स्मंअम छव व्दम ठमीपदक कोई भी पीछे न छुटे की परिकल्पना पर आधारित है। देश में स्मार्ट सिटी की जगह स्मार्ट विलेज की परिकल्पना करते हुए १७ सतत विकास लक्ष्यों को संयुक्त कर 9 सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं। जिनको केंद्र में रखकर सुदूर पिछड़े क्षेत्रों तक में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पर्यावरण, सामाजिक सुरक्षा, आधारभूत संरचना, उद्दम (सीमान्त, लघु, और मध्यम) विकसित किये जा रहे हैं। इससे न केवल शहर और गाँव के बीच अंतर कम होंगे अपितु २०३० तक लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए अमृत काल 2022–2047 में भारत को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करना भी संभव हो सकेगा।

२०१४ के बाद आई सरकार ने अन्त्योदय की संकल्पना को साकार करने के लिए जनधन, आयुष्मान, किसान सम्मान, प्रधानमंत्री आवास योजना, ओडीएफ, दीनदयाल कौशल योजना, वृध्हा, दिव्यांग, विधवा पेंशन योजना, हर घर जल मिशन, हर घर बिजली, ग्राम सड़क योजना, गरीब अन्न योजना, मुद्रा योजना, स्टार्ट अप, स्टैंड अप, मनरेगा, ई–पंचायत आदि के आध्याम से देश के गरीब, वंचित, शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, गिरिवासी, वनवासी, आदिवासी जिनकी संख्या दक्षिण अमेरिकी उपमहाद्वीप के 13 देशों की जनसँख्या जो लगभग ४७ करोड़ है, को कम शिक्षा, कम तकनीक, कम पूंजी आश्रित कौशल योजना से जोड़कर उन्हें प्रशिक्षित कर स्वावलंबी बना इनके रोजगार और आय में वृद्धि कर समाज और देश को सशक्त और आत्मनिर्भर बना समृद्ध करना है।

पंडित दीनदयाल जी कहते थे कि जब तक आर्थिक रूप से अक्षम, गरीब, वंचित, शोषित, पीड़ित, उपेक्षित समाज के आर्थिक विकास का विचार और क्रियान्वयन नहीं किया जाएगा, तब तक राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। अन्त्योदय वह दर्शन है जिसका धरातल पर क्रियान्वयन होना अतिआवश्यक है। दीनदयाल जी का कहना है कि हर भारतवासी हमारे रक्त और शरीर का हिस्सा हैं और हम सभी तब तक चौन से नहीं बैठ सकते, जब तक कि हम हर एक को यह आभास न करा दें कि वह भी भारत माता की संतान और मेरा बंधु–भगिनीं है। हम इस धरती को सुजला–सुफला अर्थात फल–फूल, धन–धान्य से परिपूर्ण बनाकर ही रहेंगे।

भारत में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समाज की आर्थिक सहायता के लिए प्रमुख रूप से दो प्रकार के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

सिद्धांत हैं –

प्रथम, रिसाव सिद्धांत जो पूंजीवाद और उपभोगवाद सिद्धांत से मिलता जुलता है। जिसमे कुलीन या आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति यदि कोई बड़ा कार्य करता है तो समाज के निम्न वर्ग को रोजगार मिलता है, या जरूरतमंद समाज किसी न किसी रूप में लाभान्वित होता है। मगर इस कार्य को करने के लिए उच्च वर्ग को अधिक पूंजी की जरुरत होती है।

द्वितीय, अन्त्योदय, जो भारतीय दर्शन की आधारशिला है। इस सिद्धांत के अनुसार जिसको जितनी जरुरत है– उसकी उतनी जल्दी उतनी मात्रा में आवश्यकता पूर्ण किया जाय। अर्थात् सरकारें जो योजना चलाती हैं चाहें वे लम्बे समय के लिए हों या कम समय के लिए, सर्वप्रथम उन योजनाओं को लागू किया जाय, जिनमें निर्धन और असहाय को सर्वप्रथम और अधिकतम लाभ हो। उनका हित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे उनमें समरसता और एकात्म का भाव उत्पन्न हो और समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प हो।

वर्तमान सरकार संस्कारक्षम, समाजोपयोगी एवं राष्ट्रभक्तों के निर्माण करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति ७०० में शिक्षा के दर्शन, पाठ्यक्रम एवं संरचना के बारे में ऐसा संयोजन किया है जिसमें देश की संस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण, पारिस्थितकीय परिवेश व आवश्यकताओं के अनुरूप देश को पुनः गौरवशाली बनाया जा सके। जिस समाज या देश में स्वावलंबन नहीं उस समाज और देश को दुनिया में कही भी सम्मान नहीं मिलता। दीनदयाल जी कहते हैं कि हमें एक ऐसी अर्थव्यवस्था बनानी होगी जिसमें रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थय और सम्मान जैसी मूलभूत आवश्यकताएं प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त हो सके। इसके साथ ही हमें हर हाथ को काम और हर खेत को पानी देने वाली योजनायें बनानी होगी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अन्त्योदय अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए हमें पोषणक्षम अर्थतंत्र, धारणक्षम टेक्नोलॉजी और संस्कारक्षम समाजतंत्र का विकास करना होगा, जो केवल सरकार के सहारे पूरा नहीं हो सकता, इसके लिए संपूर्ण समाज की सामुदायिक शक्ति को काम में लगाना होगा। तभी सच्चे मायने में स्वाधीनता से स्वतंत्रता और स्वतंत्रता से स्वराज, सुराज और रामराज्य की ओर चलकर भारत पुनः अपने पूर्व गौरव से भी अधिक गौरवशाली, सशक्त और समृद्ध भारत को अमृत काल में होने में सफल हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, प. द. (१९५८) भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा . लखनऊ : राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन।
2. उपाध्याय, प. द. (१९६०) राष्ट्र चिंतन, दिल्ली : भारतीय जनसंघ प्रकाशन।
3. झा, प. (२०१८). अन्त्योदय नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।
4. ठेगडी, द. (१९६०) एकात्म मानववाद, लखनऊः भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति।
5. दिनकर, र. स. संस्कृति के चार अध्याय, नई दिल्ली : उद्यल प्रकाशन।
6. दीक्षित, आ. म. (२०१९) सामाजिक समरसता, फैजाबादः अवध विश्वविद्यालय।
7. देवरस, ब. स. शिक्षा में भारतीयता, लखनऊ : भारतीय शिक्षण मंडल।
8. बघेल, ड. स. (२०२१) अन्त्योदय, नई दिल्ली : प्रभात पेपरबैक्स।
9. श्रीमद् भगवद पुराण, गोरखपुरः गीता प्रेस।
10. सरस्वती, स. व. (१९८४) वेद्मीमांसा, दिल्ली : गोविन्दराम हासानंद।

*****